# तकनीकी पुस्तिका
# कैमोमाईल उत्पादन

**संकलन**

सिमार, हाट कल्याणी, देवाल, चमोली, उत्तराखण्ड।

**सहयोग- गोबिन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान, कोसी, कटारमल, अल्मोडा।**

# कैमोमाईल की खेती (Chamomile)

सामान्य नाम - मैट्रीकेरिया

व्यापारिक नाम - मैट्रीकेरिया कैमामिला

वानस्पतिक नाम - मैट्रीकेरिया कैमामिला

वानस्पातिक कुरन - कैमामिला

प्रयुक्त भाग - फूल

**आवास एवं स्वभाव –** कैमोमाईल छः माह में तैयार होने वाली सुगन्धित पादप है, जिसको शीतोष्ण एवं सम-शीतोष्ण क्षेत्रों में ३०० मी० से लेकर १५०० मी० तक के क्षेत्रों में आसानी से उगाया जा सकता है।

**औषधीय उपयोग –** कैमोमाईल के फूलों का उपयोग हर्बल चाय में किया जाता है, जिससे अपच, शारीरिक दर्द, बुखार इत्यादि के रागों के रोकथाम में उपयोगी है।

इसके अतिरिक्त इसके फूलों से निष्कासित तेल का उपयोग एरोमाथैरेपी, त्वचा रोगों एवं सौन्दर्य प्रसाधन में किया जाता है।

**कृषिकरण –** कैमोमाईल का कृषिकरण हेतु रेतीली से दोमट मृदा उपयुक्त होती है जिसकी जलधारण क्षमता अच्छी हो या ऐसी भूमि जिसमें काफी लम्बे समय से धान की खेती की जा रही है इसकी खेती के लिए अच्छी मानी जाती हैं। यह फसल ६.०-६.० पी०एच० वाली मृदाओं में सफलतापूर्वक उगायी जा सकती है। क्योकि कैमोमाईल में लवणता एवं क्षारीयता को काफी हद तक सहन करनी की क्षमता होती है।

**प्रवर्धन एवं प्रसारण**–इसका प्रर्बधन मुख्यतः बीज द्वारा सीधे खेत में या पौधशाला तैयार कर किया जाता है।

**फसल अवधि–** कैमोमाईल छः माह में तैयार होने वाली पादप है। सामान्यतः कैमोमाईल के बीजों की बुवाई माह अक्टुबर- नबम्बर में किया जाता है हांलाकि पहाड़ी क्षेत्रों में इसके बीजों की बुवाई फरवरी- मार्च में भी की जाती है।

**पौध संख्या तथा दूरी –** कैमोमाईल के कृषिकरण हेतु पौधे से पौधे की दूरी १५ सेमी० तथा लाईन से लाईन की दूरी ३० सेमी० होनी चाहिए। कैमोमाईल की खेती हेतु प्रति नाली ५० से ६० ग्राम बीजों की आवषयकता होती है।

**रोपण हेतु खेत की तैयारी –** कैमोमाईल की बुवाई से पूर्व खेत को दो से तीन जुताई कर भूरभूरा बनाकर समतल किया जाता है, तथा तैयार खेतों में छोटे- छोटे क्यारियां में बांटकर जल भराव की समस्या न हो।

**रोपण –** इन बीजों को ८-१० गुना मिट्टी/कम्पोस्ट में मिलाकर खेतों में छिड़काव किया जाता है। खेतों में बीजों को छिड़काव उपरान्त हाथ से मिट्टी में मिलाकर फव्वारे से हल्की सिचाई कर देनी चाहिए। जब तक बीजों का अंकुरण न हो तब तक प्रतिदिन शाम के समय हल्की सिंचाई करनी चाहिए। लगभग २ से ३ सप्ताह में बीजों का अंकुरण हो जाता है। छिड़काव विधि से की गई बुवाई के लगभग ६-८ सप्ताह बाद खेत में जिस जगह अधिक मात्रा में पौधें उग गये है। उनके बीच की दूरी लगभग १५ सेमी० कर अनावशयक पौधों को उखाड कर ऐसी जगह रोपित कर देना चाहिए जिस जगह पौधों की संख्या कम है।

**सिंचाई एवं निराई- गुड़ाई –** कैमोमाईल में सामान्यतः हर दूसरे दिन फव्वारे से हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए, तदोपरान्त जब पौधा जड़ पकड लेता है तो आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। कैमोमाईल में हर माह में एक बार अवश्य निराई गुडाई करनी आवश्यक है।

**खाद व कम्पोस्ट** – कैमोमाईल में अच्छी फसल हेतु प्रति नाली ०१ से १.५० कु० गोबर की खाद की आवषयकता होती है।

**फसल कटाई, तुडाई व सुखाई** – रोपण के ४ माह पश्चात पौधों पर फूल आने लगते हैं, जोकि ६ माह तक आते रहते हैं। इस अन्तराल के दौरान प्रत्येक दूसरे दिन एक बार फलों की तुडाई की जानी चाहिए। फलों की तुडाई हेतु सुबह या शाम का समय उपयुक्त होता है, जिन्हे हल्की परत के रूप में हल्की धूप अथवा छायादार स्थानों में सुखाना चाहिए।

**फसल पशचात प्रबंन्धन**– फलो की परत को सूखाने तक दिन में १-२ बार पलटते रहना चाहिए, ताकि वाष्पीकरण के कारण फलों की गुणवक्ता प्रभावित न हो।

**भण्डारण** – भण्डारण हेतु कैमोमाईल के सुखे हुए फूलों को प्लास्टिक के बैग में भण्डारण करना चाहिए।

**विपणन एजेन्सी** – कैमोमाईल के विपणन हेतु कैमोमाईल की विपणन संस्थाओं से सम्पर्क किया जा सकता है।

**औसत उत्पादन** – कैमोमाईल की फसल से सूखा फूल १० से १२ किग्रा प्रति नाली होता है।

## कृषिकरण लागत

| | | |
|---|---|---|
| प्रतिनाली अनुमानित लागत | – | रू० १००० |
| प्रतिनाली अनुमानित उत्पादन | – | १०- १२ कि० ग्रा० |
| वर्तमान बाजार भाव | – | ३५०- ४०० प्रति कि०ग्रा० |
| कुल लाभ प्रति नाली | – | रू० ३५००.०० - ४८००.०० |
| शुद्ध लाभ प्रति नाली | – | रू० २५००- ३८००.०० |